# 3-जब मै पढ़ता था

मेरे पिता करमचंद गांधी राजकोट के दीवान थे। वे सत्यप्रिय, साहसी और उदार व्यक्ति थे। वे सदा न्याय करते थे।

मेरी माता जी का स्वभाव बहुत अच्छा था। वे धार्मिक विचारों की महिला थीं। पूजा-पाठ किए बिना भोजन नहीं करती थीं।

2 अक्टूबर सन् 1869 को पोरबंदर में मेरा जन्म हुआ। पोरबंदर से पिता जी जब राजकोट गए तब मेरी उम्र सात वर्ष की रही होगी। पाठशाला से फिर ऊपर स्कूल में और वहाँ से हाईस्कूल में गया। मुझे यह याद नहीं है कि मैंने कभी भी किसी शिक्षक या किसी लड़के से झूठ बोला हो। मैं बहुत संकोची था। एक बार पिता जी 'श्रवण-पितृभक्ति' नामक पुस्तक खरीद कर लाए। मैंने उसे बहुत शौक से पढ़ा। उन दिनों बाइस्कोप में तस्वीर दिखाने वाले लोग आया करते थे। तभी मैंने अंधे माता-पिता को बहँगी पर बैठाकर ले जाने वाले श्रवण कुमार का चित्र देखा। इन बातों का मेरे मन पर बहुत प्रभाव पड़ा। मैंने मन ही मन तय किया कि मैं भी श्रवण की तरह बनूँगा।

मैंने 'सत्य हरिश्चंद्र' नाटक भी देखा था। बार-बार उसे देखने की इच्छा होती। हरिश्चंद्र के सपने आते। बार-बार मेरे मन में यह बात उठती थी कि सभी हरिश्चंद्र की तरह सत्यवादी क्यों न बनें? यही बात मन में बैठ गई कि चाहे हरिश्चंद्र की भाँति कष्ट उठाना पड़े, पर सत्य को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

मैंने पुस्तकों में पढ़ा था कि खुली हवा में घूमना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है। यह बात मुझे अच्छी लगी और तभी से मैंने सैर करने की आदत डाल ली। इससे मेरा शरीर मजबूत हो गया।

एक भूल की सजा मैं आज तक पा रहा हूँ। पढ़ाई में अक्षर अच्छे होने की जरूरत नहीं,

यह गलत विचार मेरे मन में इंग्लैंड जाने तक रहा। आगे चलकर दूसरों के मोती जैसे अक्षर देखकर मैं बहुत पछताया। मैंने देखा कि अक्षर बुरे होना अपूर्ण शिक्षा की निशानी है। बाद में मैंने अपने अक्षर सुधारने का प्रयत्न किया परंतु पके घड़े पर कहीं मिट्टी चढ़ सकती है?

सुलेख शिक्षा का एक जरूरी अंग है। उसके लिए चित्रकला सीखनी चाहिए। बालक जब चित्रकला सीखकर चित्र बनाना जान जाता है, तब यदि अक्षर लिखना सीखे तो उसके अक्षर मोती जैसे हो जाते हैं।

अपने आचरण की तरफ मैं बहुत ध्यान देता था। इसमें यदि कोई भूल हो जाती तो मेरी आँखों में आँसू भर आते। मेरे हाथों कोई ऐसा काम हो, जिसके लिए शिक्षक मुझे दंड दे, तो यह मेरे लिए असह्य था। मुझे याद है कि एक बार मुझे मार खानी पड़ी थी। मुझे मार का दुःख न था, पर मैं दंड का पात्र समझा गया, इस बात का बहुत दुःख था। यह बात पहली या दूसरी कक्षा की है।

दूसरी बात सातवीं कक्षा की है। उस समय हेडमास्टर कड़ा अनुशासन रखते थे, फिर भी वे विद्यार्थियों के लिए प्रिय थे। वे स्वयं ठीक काम करते और दूसरों से भी ठीक काम लेते थे। पढ़ाते अच्छा थे। उन्होंने ऊपर की कक्षा के लिए व्यायाम और क्रिकेट अनिवार्य कर दिए थे। मेरा मन इन चीजों में न लगता था। अनिवार्य होने से पहले मैं कभी व्यायाम करने, क्रिकेट या फुटबाल खेलने गया ही नहीं था। वहाँ न जाने में मेरा संकोची स्वभाव भी कारण था। अब मैं यह देखता हूँ कि व्यायाम के प्रति अरुचि मेरी गलती थी। उस समय मेरे मन में गलत विचार घर किए हुए था कि व्यायाम का शिक्षण के साथ कोई संबंध नहीं है। बाद में समझा कि पढ़ने के साथ-साथ व्यायाम करना भी बहुत जरूरी है।

व्यायाम में अरुचि का दूसरा कारण था- पिता जी की सेवा करने की तीव्र इच्छा। स्कूल बंद होते ही घर जाकर उनकी सेवा में लग जाता। व्यायाम अनिवार्य होने से इस सेवा में विघ्न पड़ने लगा। मैंने पिता जी की सेवा के लिए व्यायाम से छुटकारा पाने का प्रार्थना पत्र दिया पर हेडमास्टर साहब कब छोड़ने वाले थे।

एक शनिवार को स्कूल सबेरे का था। शाम को चार बजे व्यायाम के लिए जाना था। मेरे पास घड़ी न थी। आकाश में बादल थे, इससे समय का पता न चला। बादलों से धोखा खा गया। जब पहुँचा तो सब जा चुके थे। दूसरे दिन मुझसे कारण पूछा गया। मैंने जो बात थी, बता दी। उन्होंने उसे नहीं माना और मुझे एक या दो आना, ठीक याद नहीं कितना दंड देना पड़ा।

'बापू' और 'राष्ट्रपिता' के नाम से पुकारे जाने वाले महात्मा गांधी के नेतृत्व में हमारा राष्ट्र स्वतंत्र हुआ। इनकी दृष्टि में सभी मनुष्य एक परमात्मा की सन्तान हैं और बराबर हैं। बापू ने जाति-पाँति, ऊँच-नीच या धर्म के आधार पर किए जाने वाले भेदभाव को व्यर्थ बताया।

मैं झूठा बना। मुझे भारी दुःख हुआ। मैं झूठा नहीं हूँ यह कैसे सिद्ध करूँ। कोई उपाय नहीं था। मैं मन मारकर रह गया। बाद में समझा कि सच बोलने वाले को असावधान भी नहीं रहना चाहिए।

-

**मोहनदास करमचंद गांधी**

**'बापू' और 'राष्ट्रपिता' के नाम से पुकारे जाने वाले महात्मा गांधी के नेतृत्व में हमारा राष्ट्र स्वतंत्र हुआ ।इनकी दृष्टी में सभी मनुष्य एक परमात्मा की संतान हैं और बराबर हैं ।बापू ने जाति-पाति,ऊँच-नीच या धर्म के आधार पर किए जाने वाले भेदभाव को व्यर्थ बताया ।**

## अभ्यास

**शब्दार्थ-**

अप्रसन्न = नाराज

असह्य = जो सहन करने योग्य न हो

सत्यवादी = सत्य बोलने वाला

गर्व = अभिमान

अनिवार्य = जो टाला न जा सके

अरुचि = रुचि न होना

बहँगी = काँवर

बाइस्कोप = तस्वीर दिखाने का एक यंत्र

1. **बोध प्रश्न**: उत्तर लिखिए -

(क) गांधी जी ने 'सत्य हरिश्चंद्र' नाटक देखकर क्या निश्चय किया ?

(ख) सैर करने की आदत से गांधी जी को क्या लाभ हुआ?

(ग) गांधी जी के सुंदर लिखावट के बारे में क्या विचार थे ?

(घ) इस पाठ से गांधी जी के व्यक्तित्व के किन-किन गुणों का पता चलता है?

2. **सोच-विचार**: बताइए -

इन बातों के संबंध में आपके क्या विचार हैं -

(क) सुंदर लिखावट (ख) प्रातःकाल भ्रमण

(ग) खेलना और व्यायाम (घ) सत्य बोलना

3. **भाषा के रंग** -

(क) 'धर्म' शब्द में 'इक' लगाने पर 'धार्मिक' बनता है। इसी प्रकार नीचे दिए गए शब्दों में 'इक' लगाकर नए शब्द बनाइए -

मास .....

पक्ष .....

वर्ष .....

सप्ताह .....

(ख) शब्दों के विलोम शब्द लिखिए -

सावधान .....

पूर्ण .....

रुचि .....

न्याय .....

प्रसन्न .....

सभ्य .....

(ग) निम्नलिखित वाक्यांश के लिए एक शब्द लिखिए -

वाक्यांश एक शब्द

(क) जो पिता का भक्त हो - पितृभक्त

(ख) जो सत्य बोलता हो - .....

(ग) जिसे सत्य प्यारा हो - .....

(घ) सत्य के लिए आग्रह - .....

(घ) नीचे लिखे शब्दों को शुद्ध रूप में लिखिए -

अनुसाशन .....

हरीशचंद्र .....

धार्मीक .....

शुलेख .....

शाहसी .....

लभकारी .....

शब्दों के बाद जो अक्षर या अक्षर समूह लगाया जाता है उसे 'प्रत्यय' कहते हैं। 'इक' प्रत्यय लगने पर शब्द का पहला स्वर दीर्घ हो जाता है

किसी शब्द के पूर्व में जुड़ने वाले शब्दांश को 'उपसर्ग' कहते हैं। जो विशेष अर्थ प्रकट करते हैं। जैसे -

अप+मान = अपमान

अ+सफल = असफल

कुछ शब्दों के पहले 'अ' उपसर्ग जोड़ देने पर बनने वाला शब्द उसका विलोम शब्द बन जाता है।

इसे कहते हैं - वाक्यांश के लिए एक शब्द।

(ङ) नीचे लिखे वाक्यों में उचित विराम-चिह्नों का प्रयोग कीजिए -

मैंने पुस्तकों में पढ़ा था कि खुली हवा में घूमना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है यह बात मुझे अच्छी लगी और तभी से मैंने सैर करने की आदत डाल ली

(च) प्रातःकाल व्यायाम करना चाहिए।

इस वाक्य में प्रातःकाल और व्यायाम शब्दों का एक साथ प्रयोग हुआ है। ऐसे दो वाक्य और बनाइए जिनमें इन दोनों शब्दों का एक साथ प्रयोग हो।

4. **आपकी कलम से** -

- अपनी पसंद के व्यक्ति के बारे में कुछ बातें लिखिए कि तुम्हें वह क्यों पसंद हैं ?
- तुम बड़े होकर किसके जैसा बनना चाहोगे और क्यों ?

5. **अब करने की बारी** -

(क) गांधी जी के जीवन से संबंधित तस्वीरें इकट्ठा करके एलबम बनाइए।

(ख) गांधी जी की प्रिय रामधुन 'रघुपति राघव राजाराम' याद करके विद्यालय की बाल सभा/गांधी जयंती पर सुनाइए।

(ग) पत्र-पत्रिकाओं से गांधी जी के जीवन से जुड़े प्रेरेरक प्रसंग चुनकर संग्रह कीजिए।

6. **मेरे दो प्रश्न**: पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -

7. **इस पाठ से -**

(क) मैंने सीखा .....

(ख) मैं करूँगी/करूँगा .....